AUGUST 2022, INDORE

COT COSMOS

NEWS HIGHLIGHTS

GLOBAL COTTON
MARKET SCENARIO

इंटरव्यू

MANJEET SINGH CHAWALA
MADHYANCHAL
PRESIDENT

राहुल भरतवाल

निखिल अविनाश अग्रवाल

AN INNITIATIVE BY SMART INFO GROUP

रॉ कॉटन पर गुजरात से तीन गुना से भी ज्यादा मंडी टैक्स वसूल रही मध्यप्रदेश सरकार

मध्यांचल कॉटन जिनर्स और ट्रेडर्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट मनजीत सिंह चावला से खास बातचीत

सवाल- मध्यांचल कॉटन जिनर्स एंड ट्रेडर्स एसोसिएशन के माध्यम से आपका उद्देश्य क्या है और आप स्वयं को इसमें कितना सफल मानते है ?
जवाब- इस एसोसिएशन को गठित करने का हमारा उद्देश्य मध्यप्रदेश में कॉटन बिजनेस को एक आधार प्रदान करना रहा है। एसोसिएशन के गठन से पहले प्रदेश की कॉटन इंडस्ट्री में बिखराव बहुत था। जिनर्स और बॉयर्स के बीच अलग अलग कंडीशन तय होती थी, हमने कोशिश की और मध्यप्रदेश में ऐसे पैरामीटर्स तय किए कि अब यहां बिजनेस की एक पद्धति है। हम सभी कॉटन व्यापारियों को एक अम्रेला के नीचे लेकर आ पाएं यही हमारी सफलता है।

Manjeet Singh Chawala
(president madhyanchal cotton)

सवाल- वर्तमान में आपकी एसोसिएशन से कितने जिनर्स और ट्रेडर्स जुड़े हुए है ?
जवाब- मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा, खरगोन,बड़वानी रतलाम, धार, इंदौर, बुरहानपुर जैसे तमाम जिले के शहर जहां कॉटन का बिजनेस होता है वहां के व्यापारी हमारी एसोसिएशन से जुड़े हुए है। वर्तमान में हमारी संस्था में 200 सदस्य है।

सवाल- आने वाले 5 सालों के लिए आप क्या विजन रखते है ?
जवाब- अगले 5 सालों में हम एक ऐसा सिस्टम बनाने की प्लानिंग कर रहे है जिसके जरिये पूरे इंडिया के कॉटन बिजनेस का एक मॉड्यूल बनाया जा सकें। इसके लिए हम बॉम्बे में स्थित कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के समक्ष एक कॉन्ट्रैक्ट लेटर प्रस्तुत कर रहे है । जिसमें अलग-अलग राज्यों के लिए अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही बिजनेस पैरामीटर तय हो।

सवाल- कॉटन इंडस्ट्री का मध्यप्रदेश में क्या भविष्य है ?
जवाब - कॉटन इंडस्ट्री, विशेषकर मिल्स व्यापारियों के लिए यहां भविष्य बहुत अच्छा है लेकिन जिनर्स के लिए बहुत अच्छा नही है। इसकी वजह है प्रदेश सरकार द्वारा वसूला जा रहा मंडी टैक्स। मध्यप्रदेश सरकार अभी रॉ कॉटन पर 170 रूपए प्रति क्विंटल यानी 1.75 प्रतिशत मंडी टैक्स ले रही है जबकि गुजरात में यह केवल 0.50 प्रतिशत और महाराष्ट्र में 0.75 प्रतिशत है। ज्यादा मंडी टैक्स लेने का नतीजा यह हो रहा है कि हमारे यहां का कॉटन नजदीकी राज्यों में खरीद लिया जाता है।

सवाल- इस इंडस्ट्री में एमपी के लिए क्या चुनौतियां है और गर्वनमेंट से आप क्या मदद चाहते है ?
जवाब - जिनिंग फैक्ट्री सामान्यतः रूरल एरिया जहां कॉटन प्रोड्यूज होता है के आस-पास लगाई जाती है। इससे वहां रोजगार पैदा होता है। गवर्नमेंट को ऐसी जगह फैक्ट्री लगाने वालों को अतिरिक्त सब्सिडी, इजी लोन सुविधा और टैक्स में राहत देनी चाहिए ताकि लोकल लेबर को प्रदेश में ही रोजगार मिलता रहे। अन्यथा हमारी लेबर अन्य राज्यों में जाने को विवश है।

सवाल- वर्तमान में एमपी गर्वनमेंट इंडस्ट्री लगाने पर कितनी सब्सिडी प्रदान करती है ?
जवाब - फिलहाल हमारे यहां 40 प्रतिशत कैपिटल सब्सिडी दी जा रही है। बड़ी टेक्सटाइल इंडस्ट्री लगाने पर 50 प्रतिशत सब्सिडी का भी प्रावधान है। इसके अलावा टेक्सटाइल मिल्स के लिए 9 प्रतिशत इन्टरेस्ट पर टर्मलोन की सुविधा उपलब्ध है जिसमें से 5 प्रतिशत इन्टरेस्ट सरकार द्वारा चुकाया जाता है। यह सुविधा छोटी इंडस्ट्री को भी मिलनी चाहिए क्योंकि ये इंडस्ट्री ग्रामीण क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी है।

सवाल- आने वाले कपास सीजन से आपकी क्या अपेक्षा है ?
जवाब - बुआई अच्छी होने से आगामी सीजन में देश में कपास की 3.60 से 3.75 लाख बेल्स आने की उम्मीद है। जहां तक क्वालिटी की बात है तो यह पूरी तरह से बारिश पर ही निर्भर है। सितंबर माह के बाद ही क्वालिटी के बारे में कुछ कहना उचित होगा। उम्मीद है कि आगामी सीजन सभी व्यापारियों के लिए मुनाफे वाला साबित हो।

सवाल - कॉटन की क्वालिटी इम्प्रूव करने के लिए जिनर्स को क्या प्रयास करने चाहिए ?
जवाब - कॉटन में कंटामिनेशन एक बहुत बड़ी समस्या है। हालांकि इसके सुधार की शुरूआत किसानों से की जानी चाहिए लेकिन जिनर्स को भी अपने स्तर पर इसे कम करने के प्रयास करने चाहिए। क्लिनिंग प्रोसीजर को और असरदार बनाना चाहिए ताकि क्वालिटी को इम्प्रूव किया जा सकें।

सवाल- वर्तमान में प्रदेश में कितनी जिनिंग फैक्ट्री है और नई फैक्ट्री लगाने की यहां क्या लागत आती है ?
जवाब - प्रदेश में लगभग 150 जिनिंग फैक्ट्री है। प्रोडक्शन के हिसाब से जिनिंग फैक्ट्री की यह संख्या ज्यादा ही है। प्रदेश में कपास की औसतन पैदावार 20 लाख बैल्स है जबकि इतनी जिनिंग फैक्ट्री के लिए 30 लाख बेल्स की आवश्यकता है। इसलिए नई जिनिंग फैक्ट्री की अभी प्रदेश को कोई आवश्यकता नहीं है। जहां तक लागत की बात है तो बिना जमीन की लागत के 24 डीआर की एक फैक्ट्री लगाने में औसतन 4 करोड़ रूपए की लागत आती है।

Global companies expect Indian exporters to REVISE RATES AS RUPEE DEPRECIATES

SWATI AGRAWAL
(Blogger)

Amid the speculations of recession and decreasing economy, the global apparel brands are looking forward to negotiate the rates with Indian exporters. The reason is twofold. Cotton prices have reduced by 15% and rupee has depreciated against dollar. The importers are eyeing on the former since long. They have asked the Indian apparel exporters to handshake the deal on pre-covid prices.

Because of the pressure of inflation in US and Europe, the global importers are trying hard on the rate reduction from Indian exporters. This recessionary trend gives rise to the threat of reduction of apparel exports for Spring 2023. ***It is noticeable that India exported garments worth $16 billion in the Fiscal year 22 and targeting to export stuff worth $19 billion for FY 23, which it could get failed in, if the current scenario prevails.***

However, Indian exporters have started seeking the markets in countries like Japan, Australia and Latin America and UAE for selling their stuff.

Also, the bigger Global brands seem to divert their garments export orders from Sri Lanka in order to play safe and de-risk the supplies amidst the political disruptions and economic crisis in the country.

No matter the supplies from island nation are cheaper as compared to India and the country has already the order book full but customers have started shifting elsewhere. It is noticeable that the country exports $5.42 billion worth of apparels annually.

The leading brands have keen interest and affinity for India made goods but they are negotiating hard on the reduction of prices because of the growing inflation in US and Europe.

The Chairman of Apparel Export Promotion Council, (AEPC), Narendra Goenka said, Indian exporters are considering to cut the rate for importers by 5% to bag orders from big firms. The marginal profit has already squeezed and further reduction on top of it will leave a deep impact, he asserted. Cotton prices went record high this year to almost 1 lakh rupee per candy, which now have been depreciated to 15% and even fall further in coming weeks.

Such significant drop in rates is pushing hard the global firms to bargain with Indian traders on the monetary front. ***Raja M Shanmugham, president of Tirupur Exporters Associations (TEA) said, Global buyers want the garments at pre-covid prices, for ex. The product we had sold for $10 this year due to the extremely soaring rates of cotton, they want to purchase it for $7, the prices at which we had sold the same in pre-covid times.***

Also, Indian rupee is weakening against US dollar and this drives again the brands to negotiate more on the price front. As per the fresh records, Indian rupee opened lower at 79.853, which is considerably low.

The AEPC Chairman also anticipates a substantial decline in the export orders from US and Europe in the period of October to March. The exporters are really hoping to compensate the losses by shifting the orders to other countries.

Sk.Amjat (Managing Director)
+91 88885 85788
+91 9404467088
skskamjat@gmail.com

GST No. 27DCHPS5982M1ZL

The Name Of Trust

Maharashtra INDUSTRIES

Ginning & Pressing Automation Systems

Hot Box, Automatic R.C. Feeding System (Trolley) One by One Lint Suction System, Super Cleaner, R.C. & Press Belt System, Seed Screw Conveyor Ginning Pressing All Solution.

Navsari Square, Walgaon Road, Amravati. 444601 (M.S.)

अकोट महाराष्ट्र के प्रसिद्ध जिनर निखिल अविनाश अग्रवाल से बातचीत

कपास में अडल्ट्रेशन (मिलावट) की समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इसका सबसे बड़ा नुकसान जिनर्स को उठाना पड़ रहा है क्योंकि कॉटन व्यापारी जब किसान से कपास खरीदता है तो वो डील बिना किसी शर्त के होती है लेकिन जब हम कॉटन बेचते है तो स्पिनर के साथ हमारी वो डील क्वालिटी को लेकर सशर्त होती है। ट्रेड के नजरिये से देखे तो यह तरीका ही अनुचित है।

समय के साथ यह समस्या और बड़ी हुई है। 10 साल पहले स्पिनिंग मिल्स में कॉटन को केवल सुपर लैंथ और माइक्रोनेर के पैमाने पर आंका जाता था लेकिन वर्तमान में जब मिल्स में हाई वॉल्युम टेस्टिंग (HVI) मशीन आ गई है तो कॉटन को आरडी वैल्यु, कलर ग्रेड, शॉर्ट फाइबर जैसे विभिन्न पैरामीटर्स पर जांचा जाता है। ऐसे में यदि नुकसान से बचना है तो अडल्ट्रेशन के खिलाफ जिनर्स को एकजुट होना होगा। जिनर्स को साथ मिलकर यह निर्णय लेना होगा कि वे क्वालिटी प्रोडक्ट ही परचेस करेंगे। यह बात कही अकोट महाराष्ट्र के प्रतिष्ठित जिनर निखिल अविनाश अग्रवाल का।

निखिल
अविनाश
अग्रवाल

15% बढ़ सकती है क्रॉप

वर्तमान में वे 5 जिनिंग फ़ैक्ट्री की कमान संभाले हुए है। निखिलजी महाराष्ट्र कॉटन जिनिंग एसोसिएशन की कमेटी के सदस्य भी है। उन्होंने कहा कि हाल ही में हमने कॉटन के करंट सिनेरियो को लेकर 350 से ज्यादा किसानों और अलग-अलग स्टेट की एसोसिएशन से चर्चा की है। उसके बाद हम इस निर्णय पर पहुंचे है कि पिछले साल की तुलना में आगामी साल में क्रॉप में लगभग 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। हालांकि ज्यादा बारिश और कीटों की समस्या के कारण फसल को नुकसान भी हो सकता है।

पर्याप्त है पानी

हमने जिन बिंदुओं के आधार पर यह निर्णय लिया है वे है- 1. कुल कितने सीड्स की बिक्री हुई है 2. कितने किसानों ने कपास की फसल को प्राथमिकता दी है 3. कौन सी कमोडिटी का रेट सबसे ज्यादा रहा है और 4. रेन पैटर्न। पिछले साल की तुलना में इस साल 40 प्रतिशत बारिश ज्यादा रही है जिससे हमारे एरिया में वर्तमान में फसल के लिए पर्याप्त पानी है।

"अडल्ट्रेशन को कम करने की जिम्मेदारी जिनर्स को ही लेनी होगी"

कंजम्प्शन बडा लेकिन प्रोडक्शन घटा

उन्होंने कहा कि समय के साथ इंडस्ट्री में कॉटन का कंजम्प्शन बड़ा है, लेकिन प्रोडक्शन घटा है। पिछले 5 सालों की कॉटन बैलेंस शीट पर नजर डालें तो कंजम्प्शन हर साल 17 प्रतिशत तक बढ़ा है जबकि प्रोडक्शन साल-दर-साल 15 प्रतिशत तक घट गया है। प्रोडक्शन घटने का एक बड़ा कारण है कि हमारी यील्ड लगातार कम होती जा रही है। सरकार को यील्ड बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमारे यहां जमीन कम है और प्रोड्यूसर ज्यादा है। रिसर्च करके सोइंग, इरिगेशन और फर्टिलाइजनर के पैटर्न को सुधारने की आवश्यता है।

सुनहरा है इंडस्ट्री का भविष्य

आने वाले कुछ साल इंडस्ट्री में पॉजीटिव ग्रोथ वाले होंगे। भविष्य अच्छा है क्योंकि अधिक से अधिक स्वचालित और आधुनिक जिनिंग की स्थापना की जा रही है। सरकार से मिल रही सब्सिडी की वजह से यहां जिनिंग फ़ैक्ट्री की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। अकोट एरिया में ही पिछले 5 साल में 15 से 20 नई जिनिंग फ़ैक्ट्री शुरू हो चुकी है। वर्तमान समय में बॉयर्स तलाशना भी बहुत बड़ी समस्या नहीं है। ऐसे में नई जनरेशन जो इस इंडस्ट्री से जुड़ना चाहती है उसे इस इंडस्टी की ग्रोथ में योगदान के लिए आगे आना चाहिए।

मेरा पैशन है कॉटन

कॉटन एक वर्सेटाइल कमोडिटी है। इसके सभी रूपों को इस्तेमाल किया जा सकता है। इसकी खासियत ही यही है कि यह कभी वेस्ट नहीं होता हैं। कॉटन की यही खूबी है जिसकी वजह से मुझे प्रेरणा

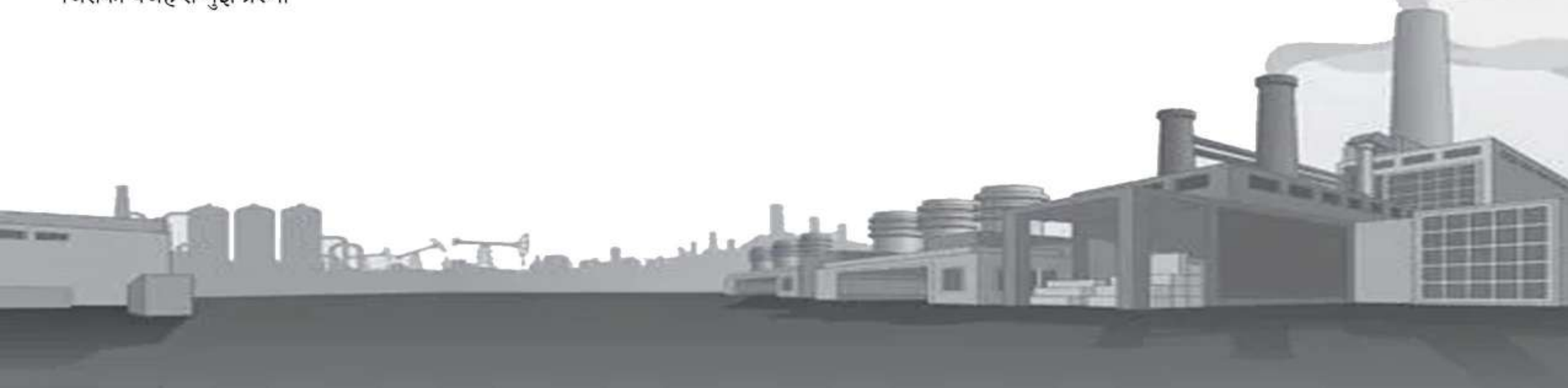

INTERVIEW

कॉटन टेस्टिंग लैबोरेटरी का काम पूरी शिद्दत से संभाल रहे - *राहुल भरतवाल*

सही समय पर सही निर्णय लेना और उससे सही भविष्य बनाना, यह कला हर किसी को नहीं आती। लेकिन आज हम जिस शख्स की बात कर रहे है उन्होंने इस कथन को भलीभांति सिद्ध किया है। जी हां, राहुल भरतवाल कॉटन इंडस्ट्री का एक ऐसा नाम है जिन्होंने कॉटन बैकग्राउंड से ना होने के बावजूद भी इस इंडस्ट्री की हर बारिकी और संभावना को समझा और उससे अपने भविष्य को उज्जवल बनाया। बैकिंग कॅरियर के दौरान इन्होंने कॉटन इंडस्ट्री में अपार संभावनाओं को आंका और तुरंत इस क्षेत्र में अपना कॅरियर बनाने की ठान ली। राहुल बताते है कि मैंने 20 हजार की नौकरी छोड़कर केवल 10 हजार की नौकरी में इस इंडस्ट्री में शुरूआत की थी। मुझे इंडस्ट्री के कई दिग्गज मिलें जिन्होंने, कदम-कदम पर गाइड किया और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया। मैंने भी जी-जान से इस इंडस्ट्री की बारीकियां सीखना शुरू की। और सीखते-सीखते आज अपनी स्वयं की कॉटन लेबोरेटरी शुरू कर ली है। सीखने का सफर अभी जारी है और इस सफर में चलते-चलते मैं महाराष्ट्र कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशन के सेक्रेटी, एक्सपोर्ट कमीशन एजेंट, कॉटन लेबोरेटरी और एक लेक्चरर की जिम्मेदारी निभा रहा हूं।

एडवांस मशीन से करते है टेस्टिंग

राहुल बताते है कि एक प्रतिष्ठित कंपनी में मैनेजर की पोस्ट पर काम करते हुए मैंने लेबोरेटरी के महत्व को समझा और इसका काम शुरू किया। आज मेरी 2 कॉटन टेस्टिंग लेब नागपुर और यवतमाल में है। इन लेब्स में हम एडवांस तकनीक की मशीन के माध्यम से कॉटन के पैरामीटर्स जैसे लैंथ, स्ट्रैंथ , माइक, आरडी वैल्यु, प्लस बी और सीजी आदि को जांचते है। हमारे लिए खुशी की बात यह है कि हमारे द्वारा टेस्टिंग सेम्पल को लगभग सभी प्रमुख मिल्स प्राथमिकता देती है। वर्तमान में एक कॉटन लैब लगाने में कम से कम 1.5 से 1.6 करोड़ की लागत आती है लेकिन अभी गर्वनमेंट इसके लिए कोई सब्सिडी नहीं दे रही है। यदि पूरी यूनिट के साथ लैब लागाई जाए तो उसके लिए सब्सिडी का प्रावधान है। वर्तमान में केवल नागपूर में 6 से 7 कॉटन टैस्टिंग लेबोरेटरी है।

कॉटन का जाना-माना नाम : राहुल भरतवाल

बांग्लादेश कॉटन एक्स्पोर्ट इन्होंने किया शुरू

जैसा कि सभी जानते है कि बांग्लादेश, भारत का प्रमुख कॉटन निर्यातक देश है। लेकिन सबसे पहले इस देश को कॉटन एक्सपोर्ट करने वाले शख्स राहुलजी ही है। उन्होंने बताया कि 2006-7 में मैंने एलजीडब्ल्यू लिमिटेड को ज्वॉइन किया था। यहां काम करते हुए ही मैंने समझा कि बांग्लादेश को जिस तरह के कॉटन की आवश्यकता होती है उसकी लगभग सभी क्वालिटी भारत में मौजूद है। उस वक्त चूंकि एक्सपोर्ट पॉलिसी और पैमेंट प्रक्रिया थोड़ी जटिल थी इसलिए लोग इस ओर जाने से कतराते थे। मैंने पहली बार भारत से बांग्लादेश में कॉटन को एक्स्पोर्ट किया था। यही पर काम करते हुए मैंने देखा कि मिल्स कॉटन की टेस्टिंग करके ही उसे परचेज करती है। बल्क में टेस्टिंग करानी हो तो कॉस्ट बहुत ज्यादा हो जाती है इसीलिए मैंने कंपनी को स्वयं की टैस्टिंग लैब शुरू करने का सुझाव दिया।

एसोसिएशन वर्क

मेरा मानना है कि ज्ञान बढ़ाने से बड़ता है इसीलिए मैं पिछले 10 साल से गर्वनमेंट इंस्टिट्यूट में लैक्चरर हूं। यहां कॉटन इंडस्ट्री पर कोर्स कराए जाते है। इसके अलावा मैं महाराष्ट्र कॉटन ब्रोकर एसोसिएशन में सेक्रेटी पद पर कार्यतर हूं। इस पद पर कार्य करते हुए ज्यादा से ज्यादा मेंबर्स को एसोसिएशन से जोड़ना मेरा उद्देश्य रहा है। क्योंकि स्ट्रैंथ जितनी बड़ेगी एसोसिएशन उतनी ही मजबूत होगी।

प्रेरणा

मेरा परिवार ही मेरी प्रेरणा है। मुझे वहीं से प्रोत्साहन मिलता है। पत्नि चित्रा, बेटी अंजलि और मां के साथ होने से जीवन की हर कठिनाई छोटी लगने लगती है। इसके अलावा मेरे सभी सहकर्मी भी मेरे लिए प्रेरणास्त्रोत से कम नहीं है। खासतौर पर अभय गुप्ताजी का नाम यहां जरूर लेना चाहूंगा। उनके साथ रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा है। मुझमें कुछ नया सीखने की ललक हमेशा रहती है। इसलिए यह भी कह सकता हूं कि मेरा काम भी कदम-कदम पर मुझे प्रेरित करता है।

सीएआई प्रेसिंडेंट 1984 से 2022 तक

1984-1985 श्री पुरुषोत्तमदास फतेहचंद झुनझुनवाला

1995-2002 श्री सुरेश ए कोटक

2007-2008 श्री पुरुषोत्तमदास पाटोदिया

2016-2017 श्री नयन सी मिरानी

1985-1995 श्री चंद्रसिंह हंसराज मिरानी

2002-2007 श्री के एफ झुनझुनवाला

2008-2016 श्री धिरेन एन सेठ

2017-2022 श्री अतुल एस गनात्रा

1984 के बाद से कपास के व्यापार, खरीद और निर्यात से संबंधित गतिविधियों के लिए भारत सरकार ने एक एजेंसी नियुक्त की जिसका नाम कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया रखा। साल 1984 के पहले यह एजेंसी दि इस्ट इंडिया कॉटन एसोसिएशन लिमिटेड के नाम से जानी जाती थी। इसे शुरू करने का उद्देश्य कपास मूल्य श्रंखला से जुड़े सभी हितधारकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करना है।

वर्तमान में सीएआई कपास उत्पादक, उत्पादक सहकारी समितियों, जिनर्स, दलालों, व्यापारियों, आयातकों, निर्यातकों आदि सहित देश के कपड़ा उद्योग के सभी खंड़ों के हित में कार्यरत है। जानिए इंडस्ट्री की कौन सी हस्तियां है जिन्होंने सीएआई के प्रेसिडेंट पद पर कार्य कर अपनी सेवाएं दी है।

* REPORT COVERED BY RAKSHA BHAGAT JAIN - + 91 - 7415028064 *

SOARED COTTON PRICES AND ITS IMPACT ON INTERNATIONAL MARKET

Textile industry has appealed from December to remove import duties on raw cotton to deal with the soaring rates of cotton in domestic market. After consideration government has removed duties from cotton but does it make any difference to textile industry?

MANISH NAIR
(Import/Export Analyst)

If we see the pattern of rate which was soaring since the season started till June ranges from 50k to 1 lakh , no cotton pundit had ever imagined such huge rise in the rates, that shaken all the assumptions. Till date rates are at pretty high side and it's the end time of season.

After exemption it was considered that rate will go back to lower side and may stay stagnant for a while but unfortunately it stayed stagnant at upper side. So exemption made zero impact on domestic market rate. But somehow industries took a breath of relief for at least a short period of time. Real problem arose when international rates went equal or higher side than that of domestic.

Apart from rate, there is surge in demand of fabric and yarn in international market. Many mills have reduced their time of working to cut the cost but stay in market. This year they faced the strong wind and bruised there shoulder in market.

Hope is still alive as decreasing global prices of cotton coupled with depreciation of the Indian rupee against US dollar have provided much needed succour to the ailing textile industry. Textile traders are anticipating fresh export orders, especially for fabrics in the next couple of months. Currently cotton prices are at a 20-month low and they are likely to go further down following large scale sowing in cotton producing states including Gujarat, Maharashtra, Madhya Pradesh, Punjab, Haryana, Karnataka, Tamil Nada and Andhra Pradesh.

In fact, cotton brokers are anticipating a cooling off of cotton prices to below Rs 65,000 per candy (356 kg per candy) once the fresh cotton crop hits the market in October this year.

Export demand for fabrics and ready-made garments is likely to witness growth in the wake of gradual reduction in cotton prices,Denim exporters from India have improved significantly following continuous fall in cotton prices. Industry has witnessed raw material (cotton) rates went up from Rs 40,000 to Rs 50,000 to as high as Rs 1.10 lakh per candy in a span of the last 18 to 20 months.

Cotton sowing figures are encouraging and the textile industry is expecting an increase in cotton harvest this season. Raw material will be available at cheaper rates and ultimately production cost will also go down. However textile demand is likely to remain muted for a period of a month or two but after that the price of cotton is likely to stabilize. Spinners, however, are not likely to get benefitted from falling cotton prices as prices of cotton yarn are decreasing faster than cotton. In this declining trend of cotton prices, weavers are demanding yarn at lower prices in anticipation of further fall in cotton rates. As far as spinners are concerned, they might be able to operate with profitability only after October once fresh stock of cotton will hit the market.

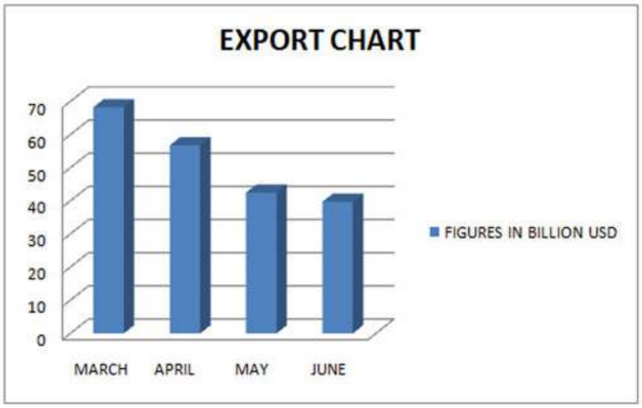

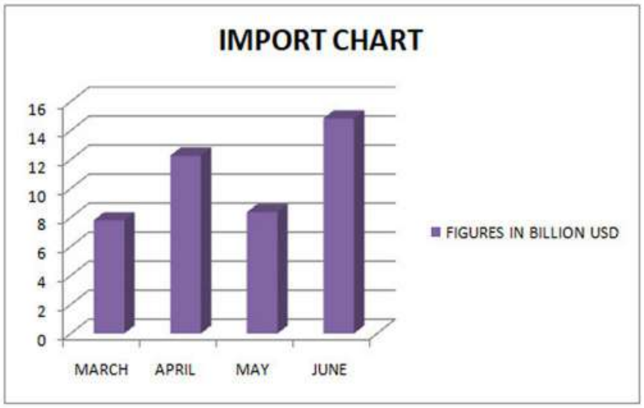

आंखो देखी

जानिए देश के अलग-अलग हिस्सों में क्या है कपास फसल की वर्तमान स्थिति

खेत से स्मार्ट इंफो की ग्राउंड रिपोर्ट

GUJARAT

गांव - खाम्बला, मनावदर, जूनागढ़
फसल की उम्र - 55 दिन
पौधे की लंबाई - 1 फीट
वर्तमान स्थिति - मिलीबग्स का आंशिक असर

किसान - जयेशभाई विरोजा

RAJASTHAN

गांव - श्रीगंगानगर
फसल की उम्र- 40 से 50 दिन
पौधे की लंबाई-2.7 से 3 फीट
वर्तमान स्थिति- फसल अभी ठीक है लेकिन यदि लगातार बारिश हुई तो सफेद मक्खी कीड़ों से फसल को खतरा है।

किसान - सुरेन्द्र कुमार

HARYANA

गांव - शरदुलगढ़, फतेहाबाद के पास,
फसल की उम्र- 80 दिन
पौधे की लंबाई- 3 से 3.5 फीट
वर्तमान स्थिति- अभी फसल स्वस्थ है। लेकिन यहां की मिट्टी चिकनी है इसलिए यदि तेज बारिश हुई तो फसल को नुकसान हो सकता है।

किसान - जयदेव जी

MADHYA PRADESH

गांव - रोहिणी, खंडवा के पास,
फसल की उम्र-45 दिन
पौधे की लंबाई- 1 फीट
वर्तमान स्थिति- अभी ठीक है।

किसान - अखिलेश पटेल

NEWS HIGHLIGHTS (JULY' 2022)

- शेयर मार्केट के लिए राहतभरा रहा जुलाई महीना, सेंसेक्स ने 1 महीने में लगभग 5 हजार रूपए की लगाई छलांग, शुरूआत में 52,666 अंक से बढ़कर महीने के अंत में पहुंचा 57,570 अंक पर।
- पूरे महीने गिरे कॉटन के भाव, नार्थ जोन में 200 रूपए, सेंटल जोन में 4500 रूपए और साउथ जोन में 8500 रूपए तक डाउन हुए फिजिकल कॉटन मार्केट के भाव।
- टेक्सप्रोसिल प्रमुख ने कहा भारत के कपास को ब्रांडिंग की सख्त जरूरत, कपास की गुणवत्ता को जांचने के लिए सरकार बनाने में जुटी योजना।
- ब्राजील कपास निर्यात में हो रही बढ़ोतरी, आगामी सीजन में 174 मिलियन टन तक पहुंचने की उम्मीद।
- 24 जुलाई को हुई कपास हितधारकों की बैठक में साइमा के अध्यक्ष रवि सैम ने कहा- कपास की बेहतर फसल के लिए किसानों को अपनाना होगा बहुआयामी दृष्टिकोण।
- घरेलू कपास की कीमतें घटी, कपड़ा मंत्रालय ने कहा कीमतें घटना और बढ़ना अंतराष्ट्रीय बाजार पर निर्भर।
- भारत द्वारा दिए आवेदन के आधार पर चीन में पॉलिएस्टर यार्न के एंटी डंपिग शुल्क की धोखाधड़ी की जांच शुरू।
- कॉटन बेल्स के डेटा में स्पष्टीकरण लाने के लिए सीसीआई का बड़ा कदम, ई-रजिस्टेशन पोर्टल पर हर जिनर को करना होगा अपना रजिस्टेशन।
- पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में कपास की फसल पर मंडरा रहा कीटों का संकट, फसल बचाने में जुटे किसान और सरकार।
- तमिलनाडू मिल्स एसोसिएशन ने अपनाया कड़ा रूख, अनुबंध को रद्द करने से इंकार कर रहे आपूर्तिकर्ताओं को ब्लैकलिस्ट करने की बना रहा योजना।

Upcoming Event(Trade fair)

YARN, FABRIC & ACCESSORIES TRADE SHOW 2022

ADD - Dana Mandi, Bahadur K Road, Near Jalandhar Bypass, Ludhiana, Punjab.
DATE - 19th Aug- 21st Aug
(Fabric, Yarn, Accessories)

SPINEXPO SHANGHAI 2022

ADD - Shanghai World Expo Exhibition & Convention Center.
DATE - 30th Aug- 1st Sept.
(Apparel, Yarn)

FALL DESIGN WEEK 2022

ADD - Atlanta Convention Center At AmericaSamrt 240 PeachTree Street Suite 2200.
DATE - 19th Sept - 21st Sept
(Apparel, Accessories, Home Textiles)

YARN, FABRIC & ACCESSORIES TRADE SHOW 2022

ADD - Dana Mandi, Bahadur K Road, Near Jalandhar Bypass, Ludhiana, Punjab.
DATE - 19th Aug- 21st Aug
(Apparel, Fabric, Fibre & Feeds Stock)

SHANGHAI INTERNATIONAL OCCUPATIONAL UNIFORM EXHIBITION 2022

ADD - Shanghai - National Exhibition And Convention Center(NECC)
DATE - 13th Sept - 15st Sept
(Apparel, Fabric)

ADVERTISE WITH US, WE HELP YOU PROMOTE

LET THE WIDER AUDIENCE KNOW ABOUT YOUR SERVICES OFFERED..

40,000+
CUSTOMERS

Avail our advertisement service and showcase your products or business to customers pan India

TO OUTREACH THE MARKET

CALL US ON
+91-9111677775

MAIL US ON
India.smartinfo@gmail.com

VISIT OUR WEBSITE
Smartinfoindia.com

RAKSHA BHAGAT JAIN (EDITOR) / CONTACT - +91 - 74150 28064